परमात्मा मायिक गुणों से मुक्त और प्रकृति से सर्वथा परे है।' इसी भाँति, मूल वेदों में, विशेषतः 'कठोपनिषद्' में जीवात्मा, परमात्मा और देह में भेद है।

श्रीभगवान् की शक्ति का एक अन्नमय प्रकाश है, अर्थात् जीवमात्र प्राण-धारण के लिए अन्न पर निर्भर करता है। इस रूप में परतत्त्व की जड़ (प्राकृत) अनुभूति होती है। अन्न में परतत्त्व का अनुभव करने पर, प्राण-लक्षण में उसका बोध होता है; अतः यह द्वितीय रूप प्राणमय कहा गया है। 'ज्ञानमय' स्वरूप में चेतना-लक्षण चिन्तन, संवेदन और संकल्प तक उन्नत होता है। इसके उपरान्त, 'ब्रह्म' तथा 'विज्ञानमय' स्वरूप का बोध होता है, जिससे जीवात्मा अपने को मन तथा जीवनचिह्नों से अलग अनुभव करता है। अगली और अन्तिम अवस्था का नाम 'आनन्दमय' है। इस प्रकार 'ब्रह्मपुच्छम्' नाम ब्रह्मतत्त्व की अनुभूति के पाँच स्तर हैं। इनमें से प्रथम तीन—अन्नमय, प्राणमय और ज्ञानमय स्तर जड़ क्षेत्र से सम्बन्धित हैं। इन सब क्षेत्रों से अतीत परमेश्वर 'आनन्दमय' हैं। ब्रह्म (वेदान्त) सूत्र में भी परम सत्य को **आनन्दमयोऽभ्यासात्** कहा है। श्रीभगवान् स्वभाव से आनन्दमय हैं और अपने इसी दिव्य आनन्द का आस्वादन करने के लिए वे विज्ञानमय, ज्ञानमय, प्राणमय तथा अन्नमय आदि अंशरूप धारण करते हैं। इस देहरूपी क्षेत्र में जीवात्मा को क्षेत्रज्ञ (भोक्ता) समझा जाता है, किन्तु आनन्दमय परमात्मा उससे भिन्न है। इसका अर्थ है कि जो जीव आनन्दमय की परायणता में आनन्द भोगने का निश्चय करता है, वह कृतार्थ हो जाता है। यह ईश्वर-क्षेत्रज्ञ, जीव-क्षेत्रज्ञ और क्षेत्र का यथार्थ स्वरूप-चित्रण है।

महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च।
इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः॥६॥
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः।
एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम्॥७॥

महाभूतानि=पंचमहाभूत; **अहंकारः**=मिथ्या अभिमान; **बुद्धिः**=मनीषा; **अव्यक्तम्**=अव्यक्त (प्रकृति); **एव**=निस्सन्देह; **च**=भी; **इन्द्रियाणि**=इन्द्रियाँ; **दश**=दस; **एकम्**=एक मन; **च**=तथा; **पञ्च**=पाँच; **च इन्द्रियगोचराः**=इन्द्रियों के विषय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध); **इच्छा**=कामना; **द्वेषः**=घृणा; **सुखम्**=सुख; **दुःखम्**=दुःख; **संघातः**=पञ्चमहाभूतों का परिणाम देह; **चेतना**=जीवन-लक्षण; **धृतिः**=धैर्य; **एतत्**=यह सब; **क्षेत्रम्**=क्षेत्र; **समासेन**=संक्षेप से; **सविकारम्**=विकारों के सहित; **उदाहृतम्**=कहा गया।

अनुवाद

पंच महाभूत, अहंकार, बुद्धि, अव्यक्त प्रकृति, दस इन्द्रियाँ, पाँच इन्द्रियविषय, इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, स्थूल देह, चेतना तथा धृति—इस प्रकार यह क्षेत्र विकारों सहित संक्षेप से कहा गया॥६-७॥